उपसंहार

उपसंहार

महिला कथाकार चंद्रकांता ख्यातनाम हैं। उनके जीवन का मूल्यांकन करने पर दृष्टिगोचर होता है कि वे मध्यवर्गीय अहिंदी-भाषी-परिवार से संबंधित संवेदनशील कहानीकार हैं। उनकी कृतियाँ अपने-आप में मौलिक स्थान रखती हैं।

चंद्रकांता ने अपने आस-पास की घटनाओं को ही कहानियों में चित्रित किया है। पारिवारिक समस्याओं से उनका मन व्याकूल हो उठता है। सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों के परिणाम स्वरूप परिवार में उफनता संघर्ष, तनाव जब उन्हें बेचैन करता है, तो अनायास उनकी संवेदनाएँ कहानी में मुखर हो उठती हैं। वे प्रारंभ से ही परंपरा-विरोधी और नवीनता की समर्थक रही हैं। अत: चंद्रकांता ने परिवर्तनशील परिस्थिति से निर्मित सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन की समस्या एवं विषमताओं का रूप ही दिखलाया है।

चंद्रकांता ने साहित्य का शुभारंभ काव्य से शुरू करके भी उन्हें विशेष सफलता कथा साहित्य में मिली है। इसी से वे मूलत: कथाकार हैं। कविता से प्रारंभ हुई उनकी साहित्य कला आज उपन्यास, कहानी आदि विविध स्तर पर पहुँच गई हैं।

उनकी पहली कहानी 'खून के रेशे', 'कल्पना' पत्रिका में सन् 1967 में हैद्राबाद से प्रकाशित हुई। तब वे हिंदी साहित्य में सफल कहानीकार के रूप में उभरकर सामने आयी हैं। उनकी कहानियों में शहरी, पाश्चात्य और ग्रामीण जीवन का सशक्त चित्रण है। उसमें शहरी जीवन की समस्याओं का बहुत वास्तविक चित्रण है।

उपन्यासकार, कहानीकार, कवियित्री चंद्रकांता का जीवन अंधेरे से प्रकाश की यात्रा है। बहुमुखी प्रतिभा की धनी लेखिका उस गड्ढे से स्वयं अपना सेतु बनाकर बाहर आयी हैं, जिसमें स्थिति ने उन्हें मिटा दिया था।

अपने लेखन में लेखिका ने जीवनानुभव को लेखनाधार बना दिया है। लेखिका का 'स्व' किसी-न-किसी रूप में हर एक का 'स्व' है। अत: कोई भी संवेदनशील पाठक उनके उपन्यासों एवं

कहानियों में अपनी तस्वीर कहीं-न-कहीं अवश्य देख सकता है।

उन्होंने अपने कहानी और उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज, विदेश जानेवाले भारतीय लोगों का चित्रण किया है। उन्होंने आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, परिस्थितियों को चित्रित किया है। अनुभूति की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण स्वातंत्र्योत्तर कालीन लेखिकाओं में या हिंदी उपन्यास एवं कहानी क्षेत्र में चंद्रकांता का स्थान विशेष है।

चंद्रकांता ने पूरे कहानी संग्रह में अनिवासी भारतीयों एवं उनके माता-पिता की समस्या, अपने मूल निवास से दूर कहीं शहरों में बसे गए बेटों और उनके वृद्ध माता-पिता की समस्या, तेजी से होते सांस्कृतिक संक्रमण की समस्या और आतंकवाद की समस्या को चंद्रकांता ने बहुविध रूपों में कई कहानियों में प्रमुखता से स्वर दिया है। इसके अलावा भी जीवन के अहम् प्रश्नों को भी उन्होंने करीब से छूने की कोशिश की है।

चंद्रकांता की कहानियों की भाषा सशक्त है। परिवेश की माँग के अनुरूप उन्होंने पंजाबी एवं कश्मीरी मिश्रित देशी एवं विदेशी शब्दालियों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। किंतु कहीं-कहीं ऐसे स्थल आम पाठकों के लिए दुरूह भी हो गए हैं। उनकी कहानियों में स्थान-स्थान पर नए एवं मौलिक उपमान देखे जा सकते हैं, जिनमें से कुछ औसत और कुछ अत्यंत चित्ताकर्षक भी हैं। कुछ स्थलों पर तो अच्छे उपमानों की श्रृंखला-सी रच दी गई है। कहीं-कहीं भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए प्रतीकों का सहारा लिया गया है। व्यंग्य के पुट का कम-से-कम प्रयोग दृष्टिगत होता है।

अनेक कहानियों का अधिकांश भाग स्मृतियों पर आधारित है। स्वप्न भी एक कहानी का प्रमुख अंग बना है। कहानी-संग्रह में कहानियों के क्रम निर्धारण एवं पात्रों के नामकरण में किंचित अनवधानता दिखाई पड़ती है, क्योंकि विषयगत दृष्टि से कहानियों की विशेषताओं को और अधिक आसानी से अनुभव करें।

चंद्रकांता के ये कहानी-संग्रह अपनी कथ्यगत एवं शिल्पगत मौलिकताओं के कारण हिंदी कहानी साहित्य में एक पृथक स्थान बनाने में निश्चय ही सफल हुए हैं।

मध्यवर्गीय समाज जीवन दिन-ब-दिन जटिल होता जा रहा है। मध्यवर्गीय समाज आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से आपस में समानता रखता है। वर्तमान भारतीय

समाज में मध्यवर्गीय समाज ही अधिक संख्या में व्याप्त है। चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित कुछ मध्यवर्गीय समाज के पात्रों या परिवारों की आय का स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है, तो कुछ का नहीं मिलता। उनकी सभी कहानियों में मध्यवर्गीय समाज और निम्न मध्यवर्गीय समाज का चित्रण हुआ है।

विवेच्य कहानियों में मध्यवर्गीय समाज-जीवन में आज भी विवाह विषयक कई रीतियाँ प्रचलित हैं उनका चित्रण मिलता हैं। आजादी के बाद शिक्षा की लहर तेजी से बढ़ने के कारण अनेक शिक्षित युवक-युवतियाँ प्रेम विवाह करने लगे हैं। कुछ प्रेम-विवाह असफल भी सिद्ध होते हैं। इस समाज में संयुक्त परिवार की परंपरा कम होती जा रही है।

आधुनिक युग में शिक्षा तथा विज्ञान का प्रसार, औद्योगिकरण, वैयक्तिक्ता का विकास, नए दृष्टिकोण तथा आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तन आदि के कारण परिवार का विघटन तेजी से हो रहा है। पति-पत्नी में सच्चे प्रेम का अभाव होने के कारण तथा तीसरे व्यक्ति का आगमन होने के कारण दांपत्य जीवन सफल नहीं होता है।

विवेच्य कहानियों में प्रतिबिंबित मध्यवर्गीय समाज रूढ़ि-परंपराओं तथा रीति-रिवाजों से इतना चिपक गया है कि वह उन्हें छोड़ नहीं सकता। इसमें अलग-अलग प्रसंगों पर अलग-अलग रूढ़ि-परंपरा और रीतियाँ प्रचलित हैं।

मध्यवर्गीय समाज में आय के स्त्रोत अत्यंत सीमित हैं। नौकरी ही उस समाज की आय का प्रमुख साधन है। अर्थ के अभाव के कारण मध्यवर्गीयों को जीवन जीना दुश्कर हो गया है। आज अर्थ को ही महत्त्व प्राप्त हो गया है। अर्थ-प्राप्ति के लिए मानव चोरी, लाचारी, भ्रष्टाचार आदि का सहारा लेता है। चंद्रकांता की कहानियों में निम्न-मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण उनकी अभिव्यक्ति का केंद्र बिंदू रहा है।

मनुष्य पैदा होते ही उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हर युग में समस्याएँ होती हैं। लेकिन हर युग की समस्याएँ एक जैसी नहीं हो सकती। मानव को विकास के साथ ही किसी-न-किसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कोई युग ऐसा नहीं कि उस युग में

मानव को कोई समस्याएँ नहीं थी। समस्या निर्माण के कारण भी भिन्न-भिन्न हैं, किंतु किसी-न-किसी रूप में समस्याएँ होती हैं। परंतु मनुष्य ने उन समस्याओं का हल निकालकर विकास किया है।

चंद्रकांता के 'सूरज उगने तक' और 'दहलीज पर न्याय' कहानी संग्रहों में कुल-मिलाकर 38 कहानियाँ हैं। हर कहानी में अलग-अलग समस्याओं का चित्रण हुआ है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ पैदा हुई थी। वर्तमान युग में बेकारी की समस्या बढ़ गई है। शहरीकरण का परिणाम कस्बाई जीवन पर हो गया है। उन्होंने महानगरीय जीवन में अविश्वास, टूटते दांपत्य संबंध, भूख की समस्या, दिखावटीपन की समस्या आदि का चित्रण किया है।

नेता लोग सामान्य व्यक्ति को किस प्रकार गुमराह करते हैं, झूठ बोलते हैं, बेरोजगारी के कारण युवक को दर-दर की ठोकरें खाते हुए पागल की तरह रास्ते पर घूमना पड़ रहा है। आज भी जनता का शोषण हो रहा है। इसका यथार्थ चित्रण चंद्रकांता की कहानियों में मिलता है।

मजदूरों का शोषण, भ्रष्टाचार, स्त्रीयों का शोषण आदि के मार्मिक चित्र चंद्रकांता की कहानियों में शब्द बद्ध हुए हैं। टूटते हुए दांपत्य-संबंध में पति-पत्नी के बीच संघर्ष है। पत्नी स्वतंत्रता चाहती है और पति अपना स्वार्थ देख रहा है। दोनों में मेल नहीं है। माता-पिता, भाई-बहन आदि के संबंधों में विघटन आ रहा है।

लेखिका ने अस्पताल की दुरावस्था, टूटते संबंध, नि:संतान को समाज में प्राप्त स्थान, नेता की कूट-नीति, रक्षक ही भक्षक बनने की समस्या, बेकारी की समस्या, आंतर्जातीय विवाह की समस्या, आतंकवाद की समस्या, दिखावटी प्रेम की समस्या, दहेज समस्या, रूढ़ि-परंपरा आदि समस्याओं को यथार्थ रूप में उजागर किया है।

उपर्युक्त समस्याओं का चित्रण सफलता से चंद्रकांता ने विवेच्य कहानियों में किया है जो बड़ा मार्मिक है। चंद्रकांता ने चित्रित की हुई समस्याएँ अपने परिवेश के साथ पूर्णत: तादात्म्य रखती हैं।

चंद्रकांता की कहानियों में अनेक विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। लेखिका ने अपनी कहानियों में झूठ और पाखंड़ की प्रवृत्ति का चित्रण, सामाजिक आदर्श, घृणित प्रवृत्तियों का चित्रण,

सामाजिक यथार्थ, अंधविश्वास एवं रूढ़ि-परंपरा और सामाजिक विसंगतियाँ आदि विशेषताओं का चित्रण किया है। चंद्रकांता की कहानियों में कहानी कला की दृष्टि से विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। उनके कहानियों के शीर्षक सांकेतिक एवं व्यंजनात्मक हैं। कई कहानियों के शीर्षक पूराने मूल्यों के प्रतीक हैं, तो कई परंपरागत हैं। चंद्रकांता की कहानियों के कथानक में शहरी और ग्रामीण जीवन के विविध पहलुओं का चित्रण सहजता से और यथार्थ ढंग से हुआ है। लेखिका ने पात्रों के आंतरिक एवं बाह्य गुणों तथा आंतरिक द्वंद्व का मार्मिक चित्रण किया है। चंद्रकांता की कहानियों में कथोपकथन सरल-सीधे, प्रभावी, पात्रानुकूल है, कहीं-कहीं संवाद छोटे हैं, तो कहीं-कहीं काफी लंबे हैं। लेखिका ने देशकाल वातावरण का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कहानियों की भाषा-शैली सीधी और सरल है। उन्होंने कहीं-कहीं, उर्दू फारसी, पंजाबी, कश्मीरी और अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने वातावरण परिस्थिति और काल के अनुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है। निष्कर्षतः स्पष्ट है कि कहानी कला की दृष्टि से चंद्रकांता की कहानियाँ सशक्त एवं श्रेष्ठ हैं।

चंद्रकांता ने अपनी कहानियों में उद्देश्य की पूर्ति करने में सफलता पाई है। लेखिका इसी तरह का कार्य आज भी कर रही हैं। उनकी कलम में जो शक्ति है वह उनके कहानी साहित्य में देखने को मिलती है।

प्रस्तुत शोध-कार्य की मौलिकता -

1. चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज के पात्रों का गहराई से अध्ययन करके उनके प्रत्येक पक्ष को चित्रित किया है।
2. चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज जीवन की समस्याओं का विवेचन सूक्ष्मता से किया है।
3. विवेच्य कहानियों में चित्रित मध्यवर्ग के पात्रों के साथ-साथ निम्न वर्ग और उच्च वर्ग के पात्रों का भी विवेचन किया है।
4. विवेच्य कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय पात्रों की विशेषताएँ एवं विवेच्य कहानियों की कहानी कला की दृष्टि से विशेषताओं का चित्रण करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

1. चंद्रकांता नई कहानीकार हैं । उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रण करके उनकी समस्याओं की ओर निर्देश किया है।
2. शिक्षित युवकों ने अपने-आपको स्वतंत्र जीने की आदत डालनी चाहिए।
3. नई पीढ़ी को चाहिए की वह पुरानी पीढ़ी को समझ ले।
4. रूढ़ि, परंपरा को तिलांजली देनी चाहिए।
5. भ्रष्ट अफसर या वरिष्ट अधिकारी के विरोध में मजदूरों ने आवाज उठानी चाहिए और उनका संघर्ष करना चाहिए।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

चंद्रकांता के साहित्य पर निम्नांकित विषयों पर स्वतंत्र अनुसंधान किया जा सकता है।

1. चंद्रकांता के कथा साहित्य का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन।
2. चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित समस्याओं का मूल्यांकन।
3. चंद्रकांता की कहानियों में चित्रित नारी।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के दौरान प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र अनुसंधान हो सकता है। भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोध-कार्य संपन्न कर सकते हैं।